बालटी के अन्दर समन्दर | कक्षा में कहानी

श्वेता विश्वकर्मा

हम प्राथमिक कक्षा में भाषायी कौशलों के विकास में बाल साहित्य के महत्त्व से अवगत हैं। कविताएँ, कहानियाँ, चित्र, सन्दर्भ, विभिन्न प्रकार के पात्र आदि सभी विद्यार्थियों के सीखने के स्तर के आधार पर अच्छे बाल साहित्य में शामिल किए जाते हैं। आज के बाल साहित्य में विविध सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय सन्दर्भ होते हैं। अतः इसका उपयोग सिर्फ़ विशेष उद्देश्यों तक ही सीमित नहीं है; बल्कि यह हमें इसे विभिन्न तरीक़ों से इस्तेमाल करने के अवसर देता है। एक तरह से यह दुनिया को समझने का एक माध्यम है।

प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाते समय रचनात्मक शिक्षक, कहानियों, क़िस्सों, कविताओं और स्थितियों का उपयोग जिज्ञासा पैदा करने, नई चीज़ों को खोजने और प्रेरित करने के लिए करते हैं और विद्यार्थियों को अपनी जिज्ञासाओं को पूरा रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हालाँकि बाल साहित्य को केवल भाषायी क्षमताओं के विकास के लिए देखने से इसका महत्त्व कम हो जाता है। यदि कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में किसी भी बाल साहित्य या पुस्तक को शामिल किया जाता है, तो इससे न केवल भाषायी कौशल, बल्कि अन्य विषयों में निहित कौशलों के विकास के अवसर भी पैदा होते हैं। हम किसी भी कहानी या कविता में दी गई स्थितियों, घटनाओं और पात्रों का उपयोग करके अपनी कक्षा में पर्यावरण अध्ययन (ईवीएस) में निहित उद्देश्यों और कौशलों के विकास के अवसर पैदा कर सकते हैं।

एक उदाहरण

मैं अवेहि-अबकस प्रोजेक्ट[1] के तहत एकलव्य द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक के उदाहरण के साथ अपनी बात को स्पष्ट करना चाहूँगी। पुस्तक *बालटी के अन्दर समन्दर* (The Sea in a Bucket)[2], बेहद दिलचस्प तरीक़े से जल सम्बन्धी कई परिदृश्यों की खोजबीन करती है। यह न केवल पानी के उपयोग, बल्कि पानी की पूरी यात्रा को भी को दर्शाती है।

आइए हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि यह पुस्तक ईवीएस के शिक्षण में इतनी महत्त्वपूर्ण संसाधन क्यों है।

पानी की कहानी सोनू की बालटी के साथ शुरू होती है। यह पता लगाना है कि सोनू की बालटी में पानी कहाँ से आता है- समुद्र से शुरू होकर सूरज, बादलों, पहाड़, नदी, झील, पाइप के साथ चलकर नल के साथ समाप्त होता है। फिर यह वर्णन सोनू की बालटी से ज़मीन में रिसने वाले पानी के चक्र के साथ जारी रहता है और अन्त में, समुद्र में फिर से मिल जाता है। इस तरह के विषय पर काव्यात्मक और कल्पनाशील तरीक़े से विचार करना कठिन है। अक्सर, जिस तरह से हमारी कक्षाओं में ऐसे विषयों को प्रस्तुत किया जाता है, वह यांत्रिक होता है, जहाँ विषयवस्तु परिभाषा, महत्त्व, प्रक्रिया जैसे विशिष्ट बिन्दुओं तक सीमित होती है। मगर इस पुस्तक की शैली इसे अलग और विशेष बनाती है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, अन्य पात्रों का परिचय दिया जाता है। पन्नों और पंक्तियों के अच्छी तरह से जुड़े होने से कहानी बख़ूबी बहती है। हम इसे एक उदाहरण से बेहतर समझ सकते हैं :

यह है नदी

जो मिल जाती है झील में

जिसका ठहरा शान्त पानी

पाइप में चलकर

नल में से टपककर

भरता है सोनू की बालटी को।

***

ये हैं पहाड़

जहाँ से बहती है नदी

जो मिल जाती है झील में

जिसका ठहरा शान्त पानी

पाइप में चलकर

नल में से टपककर

भरता है सोनू की बालटी को।

यह क्रम न केवल शब्दों में बल्कि चित्रों में भी परिलक्षित होता है। पुस्तक में चित्र विविधतापूर्ण और आकर्षक हैं — चाहे वह सोनू का घर हो या अलग-अलग स्थानों पर बहने वाले पानी का प्रवाह। आस-पास के वातावरण, परिदृश्य और गतिविधियों को चित्रों में बारीकी से प्रदर्शित किया गया है।

चित्रों का क्रम कई स्थितियों में जीवन को भी दर्शाता है। यह जीवनचक्र मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है; इसमें जानवरों, पेड़-पौधों, श्रमिकों, आवासों की संरचना और अन्य व्यवस्थाओं को भी देखा जा सकता है। पुस्तक में कहानी के साथ-साथ दृश्य भी आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं।

ईवीएस के लिए पुस्तक का उपयोग करना

जैसा कि पहले कहा गया है, हम इस पुस्तक की मदद से कौशल विकास और पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के उद्देश्यों को प्राप्त करने के अवसर पैदा कर सकते हैं। आइए इसे इस तरह से देखें — ईवीएस पाठ्यक्रम में 'जल' को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है। कक्षा-3 से 5 तक की एनसीईआरटी या किसी भी अन्य राज्य की पाठ्यपुस्तक में जल के बारे में कई अध्याय देखे जा सकते हैं। यह परिकल्पना की गई है कि इन अध्यायों में शामिल गतिविधियाँ और अभ्यास विद्यार्थियों को जल के स्रोतों, उपयोगों, महत्त्व, स्वच्छता, संरक्षण और मूल्य से परिचित कराएँगे, साथ ही बच्चों को अपने आस-पास की इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाएँगे। हम अपनी कक्षाओं में बच्चों की पुस्तकों का उपयोग करके इस प्रक्रिया में सहयोग दे सकते हैं।

हम इस पुस्तक की मदद से इसे कुछ चरणों में समझने की कोशिश करेंगे।

चर्चा

शिक्षक पुस्तक के शीर्षक के बारे में पूछकर शुरुआत कर सकते हैं, बालटी के अन्दर समन्दर - क्या यह सम्भव है कि एक समुद्र एक बालटी में फिट हो जाए? कई विद्यार्थी समुद्र से अपरिचित हो सकते हैं। कक्षा में इस कहानी पर बातचीत के माध्यम से विद्यार्थी समुद्र की अवधारणा को समझेंगे। इसी तरह, आपसी संवादों का उपयोग उन्हें पुस्तक में प्रस्तुत नए शब्दों को समझने में मदद करने के लिए किया जा सकता है। पुस्तक में दिए गए चित्रों के बारे में बात करना विद्यार्थियों के लिए अध्याय के साथ सम्बन्ध बनाने में उपयोगी होगा। शिक्षक वार्तालाप को विद्यार्थियों के सन्दर्भों के लिए प्रासंगिक बनाने की कोशिश कर सकते हैं और उदाहरण प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें नए सन्दर्भों की कल्पना करने और समझने का अवसर दे सकते हैं।

अवलोकन और जुड़ाव

यह पुस्तक न केवल जल की यात्रा की व्याख्या करती है, बल्कि यह अन्य अवधारणाओं से भी जुड़ती है। इस पुस्तक में जानवरों, पौधों, पेड़ों, जीवन जीने के तरीक़ों, गतिविधियों, कपड़ों आदि के चित्रों की एक विस्तृत शृंखला है। विद्यार्थियों को पुस्तक में दिए चित्रों का अवलोकन करते हुए विभिन्न वस्तुओं को छाँटने और उनकी सूची बनाने की गतिविधि सौंपी जा सकती है। इसके अलावा, विद्यार्थियों के साथ अन्य परिवेशों में अन्तर और समानताओं पर भी चर्चा की जा सकती है।

घटनाओं को उनके आस-पास के वातावरण से सम्बन्धित करना

ईवीएस पढ़ाने के मुख्य उद्देश्यों में से एक विद्यार्थियों को उनके परिवेश के माध्यम से विषयवस्तु को समझकर दुनिया को समझने में मदद करना है। वे नए ज्ञान की ओर बढ़ने के लिए, जो पहले से जानते हैं, उसका उपयोग कर सकते हैं। ऐसे मामले में, बच्चों को पढ़ाते समय, नई जानकारी के निर्माण में सहायता करने वाली प्रक्रियाओं को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण है। इस कहानी के लिए, नज़दीक के जल स्रोतों को समझना, उनमें हो रहे परिवर्तनों का अवलोकन करना व समझना और साथ ही अन्य नए स्रोतों के बारे में जानना शामिल हो सकता है जो उनके क्षेत्र में मौजूद नहीं हैं, उदाहरण के लिए, पानी की टंकियों और झीलों द्वारा नदियों और समुद्रों को समझना।

प्रोजेक्ट कार्य

प्रोजेक्ट कार्य विद्यार्थियों को समूहों में या व्यक्तिगत रूप से सौंपे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, आस-पास के जल स्रोतों की खोज, पानी के घरेलू और अन्य उपयोगों के बारे में जानकारी एकत्र करना और यह निर्धारित करना कि उनके गाँव, इलाक़े या शहर में पानी कहाँ से आता है, ये कुछ ऐसे विषय हैं जिनका पता लगाया जा सकता है। सम्बन्धित जानकारी एकत्र करने के लिए, शिक्षक विद्यार्थियों के साथ प्रश्नावली निर्माण, दूसरों के साथ बातचीत और अवलोकन जैसे कौशलों पर काम कर सकते हैं। अन्त में, विद्यार्थियों की समझ का दस्तावेज़ीकरण किया जा सकता है और कक्षा में उन्हें प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार के अभ्यास कार्य विद्यार्थियों को सम्बन्धित विषय को अपने अनुभवों से जोड़कर उसे समझने में मदद करते हैं।

अन्य संसाधन

यह एक पुस्तक का उदाहरण है। अन्य पुस्तकें पर्यावरण और हमारे आस-पास की दुनिया से सम्बन्धित समान घटनाओं और विषयों का अधिक व्यापक तरीक़े से पता लगाती हैं। उदाहरण के लिए, *बीज बोया* (एकलव्य प्रकाशन), उस क्रम का वर्णन करती है जिसमें एक बीज से एक पौधा और फल निकलते हैं। इसके विपरीत, *मोर डूँगरी* (जुगनू प्रकाशन) गाँवों से शहरों की ओर पलायन के साथ-साथ मनुष्यों और जानवरों के बीच के सम्बन्ध को बेहद संवेदनशीलता के साथ दर्शाती है। यह बहुत आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तक के अलावा, ऐसे संसाधनों को कक्षा में शामिल किया जाए।

Endnotes

i AVEHI ABACUS PROJECT (AAP) aims to strengthen the quality and content of education in primary schools. http://www.avehiabacus.org/

ii Balti Ke Andar Samandar. Avehi-abacus. Illustrator: Deepa Balsawar. Eklavya. https://eklavyapitara.in/products/balti-ke-andar-samandar



श्वेता विश्वकर्मा मध्य प्रदेश के खरगोन में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन जिला संस्थान में काम करती हैं। वे शिक्षकों के साथ फील्ड-स्तर के जुड़ाव और भाषा शिक्षण और सीखने से सम्बन्धित सामग्री निर्माण प्रक्रियाओं का हिस्सा रही हैं। इससे पहले वे मुस्कान, भोपाल के साथ थीं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से एमए (शिक्षा) की पढ़ाई की है। वे बाल साहित्य की शौक़ीन हैं और यह जानना और समझना पसन्द करती हैं कि इसे विभिन्न सन्दर्भों में कैसे बनाया जा रहा है। उनसे *shweta.vishwakarma@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय